● पढ़ो और समझो :

८. पद

यहाँ दोहों एवं पदों के माध्यम से संतो ने नीतियों एवं अपने आराध्य के प्रति समर्पण को दर्शाया गया है ।

विचार मंथन

।। संत न छाड़ें संतई ।।

दादू

घीव दूध मैं रमि रह्या, व्यापक सब ही ठौर ।
दादू बकता बहुत हैं, मथिकाढ़ै ते और ।।
सब हम देख्या सोधि करि, दूजा नाहीं आन ।
सब घट एकै आत्मा, क्या हिंदू मुसलमान ।।

×× ××

मीरा

पायो जी, मैंने राम-रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सत गुरु, किरपा करि अपनायो ।
जनम-जनम की पूँजी पाई जग में सबै खोवायो ।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव खेवटिया सत गुरु, भवसागर तरि आयो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरखि-हरखि जग गायो ।

×× ××

नानक देव

जो नर दुख में दुख नहिं मानै ।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ।।
नहिं निंदा नहिं स्तुति जाके, लोभ, मोह, अभिमान ।
हरष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान-अपमान ।।

×× ××

❑ उचित लय-ताल से पद एवं दोहों का पाठ करें । एकल, गुट में सस्वर पाठ कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से इनमें आए भावों को स्पष्ट करें । कुछ दोहों एवं पदों के भावार्थ लिखने के लिए प्रेरित करें । पाठ में आए देशज शब्दों के खड़ी बोली रूप लिखवाएँ ।

स्वयं अध्ययन

किसी प्राचीन कवि की जानकारी प्राप्त करो :

- परिचय
- मुख्य ग्रंथ
- लेखन की भाषा
- विधाएँ

वृंद

फेर ने ह्वे हैं कपट सों जो कीजै व्यौपार ।
जैसे हाँड़ी काठ की चढ़ै न दूजी बार ।।
भले बुरें सब एक सों जौं लौ बोलत नाहिं ।
जानि परतु हैं काक पिक रितु वसंत के माँहि ।।

×× ××

रैदास

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी । जाकी अंग-अंग बास समानी ।।
प्रभु जी तुम वन घन हम मोरा । जैसे चितवत चंद चकोरा ।।
प्रभु जी तुम माली हम बागा । जैसे सोनहि मिलत सुहागा ।।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा । ऐसी भगति करै रैदासा ।।

×× ××

रसखान

धूरि भरे अति सोभित स्याम जू वैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरै अँगना पग पैंजनियाँ कटि पीरी कछोटी ।।
वा छवि को रसखानि विलोकत वारत काम कलानिधि कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सौ लै गयो माखन रोटी ।।

×× ××

❑ कक्षा में 'सस्वर दोहे-प्रस्तुति' प्रतियोगिता का आयोजन करें । सूर, कबीर, तुलसी, मीरा के अन्य दोहे-पद पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । विद्यार्थियों को कुछ नीतिपरक दोहों के संकलन करने तथा हाव-भाव से गाने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

सुनो तो जरा

किसी एक कहावत के अर्थ का अनुमान लगाते हुए संबंधित आशय सुनाओ ।

शब्द वाटिका

नए शब्द

हरष = खुशी
नियारो = अनोखा, तटस्थ
सम = बराबर
बास = खुशबू
सोनहि = सोना, स्वर्ण
अमोलक = अमूल्य
सत = सत्य
भवसागर = संसार सागर
तरि = तैर
हरखि = प्रसन्न होकर
जस = यश
विलोकत = देखकर
वारत = न्योछावर
काम = कामदेव
काग = कौआ
हरि = कृष्ण, विष्णु

बताओ तो सही

तुम्हें पठित पदों में से कौन-सा पद अच्छा लगा और क्यों ? बताओ ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

अगर तुम किसी बाग के बागवान होते तो .....

वाचन जगत से

किसी बाल उपन्यास का लघु अंश पढ़ो और कक्षा में बताओ ।

अध्ययन कौशल

संकेत स्थल की संरचना ज्ञात करो और अध्ययनपूरक वीडियो क्लिप्स डाउनलोड करो और पढ़ो ।

मेरी कलम से

अपने विद्यालय में मनाए गए संविधान दिवस का वृत्तांत तैयार करो ।

खोजबीन

हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखित 'कबीर ग्रंथावली' से दस दोहे ढूँढ़कर अर्थसहित चार्ट पेपर पर लिखो ।

❊ पाठ के किसी एक पद का सरल अर्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

संत साहित्य समाज के लिए पथ प्रदर्शक का काम करता है ।

भाषा की ओर

वाक्य में रेखांकित शब्दों के शुद्ध रूप बनाकर वाक्य पुनः लिखो :

वह पाठशाला नहीं आया **क्युंकि** वह बीमार है ।

आज **बहोत** गर्मी है ।

भारिश के होने से जंगल हरा-भरा हो गया ।

उसने पूछा **की** क्या साहब अंदर हैं ?

मैं कल मुंबई **जाउँगा** ।

राकेश **ओर** उसका भाई साथ-साथ खेलते हैं ।

वे अपना काम स्वयं करते **है** ।

मय अपनी पढ़ाई पूरी करके खेलने जाती हूँ ।

किसी की **निदा** नहीं करनी चाहिए ।

उसके पास साइकिल है **इसलिये** वह जल्दी आता है ।

● **पढ़ो, समझो और बताओ :**

९. ऐसे उतारी आरती

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से आधुनिक तकनीकी ज्ञान, उसके उपयोग एवं जीवन के कार्यों की सहजता को दर्शाया गया है ।

बताओ तो सही

दृश्य १

(रात के आठ बज गए हैं । प्रतीक ने अभी तक खाना नहीं खाया है । उसका मन बहुत खिन्न है । मुँह लटकाए, उदास मन कमरे में बैठा है ।)

माँ : **(आवाज देते हुए)** प्रतीक कहाँ हो ? आठ बज गए । अभी तक तुमने खाना नहीं खाया । जल्दी आओ खाना खा लो । **(प्रतीक कोई उत्तर नहीं देता । बिस्तर पर लेट जाता है । कुछ देर बाद माँ फिर आवाज देती हैं ।)**

माँ : प्रतीक तुम सुन क्यों नहीं रहे हो ? खाना खा लो । अभी बरतन साफ करने हैं । कल की पूरी तैयारी भी करनी है । **(प्रतीक धीरे–से आता है । बरतन साफ करने लगता है । उसी समय पिता प्रद्युम्न घर में प्रवेश करते हैं ।)**

पिता जी : वाह बेटा प्रतीक ! तुम कितने अच्छे हो । माँ के हर काम में सहयोग देते हो । **(पत्नी जाह्नवी को आवाज लगाते हुए)** जाह्नवी ऽ ऽ ! देखो ! हमारा बेटा बरतन साफ कर रहा है । तुम्हारा हाथ बँटा रहा है । हमारा लाड़ला बेटा कितना अच्छा है !

माँ : अरे ! इस बच्चे का मैं क्या करूँ । मेरी एक बात नहीं सुनता ।

पिता जी : तुम ऐसा क्यों कहती हो ? यह बेचारा तो तुम्हारा सहयोग ही कर रहा है ।

माँ : अपना बेटा अच्छा है । घर के हर काम में सहयोग करता है; यह भी सही है पर अभी तक उसने खाना भी नहीं खाया है । मैं कब से उसे आवाज लगा रही हूँ ।

पिता जी : **(प्रतीक के सिर पर हाथ फेरते हुए)** बेटे ! क्या बात है ? अभी तक खाना क्यों नहीं खाया ? **(प्रतीक पिता जी को पकड़कर फफककर रोने लगता है ।)**

माँ : अरे ! क्या हुआ बेटा? क्यों रो रहे हो ? मुझे बताओ तुम्हें क्या चाहिए ?

प्रतीक : **(सुबकते हुए)** कल रक्षाबंधन है । दीदी अभी तक आई ही नहीं ।

माँ : अरे बेटा ! इसमें रोने की क्या बात है ? दीदी ने तो तुम्हें पहले ही राखी भेज दी है ?

पिता जी : बेटा तुम्हारी दीदी हर साल तो आती ही है । इस वर्ष उसके नाटक का मंचन है । वह नाटक की तैयारी कर रही है । उसने ई–रेल से टिकट भी आरक्षित करना चाहा पर उसे मिला नहीं इसीलिए नहीं आ पा रही है । अगले साल रक्षाबंधन पर तो आ ही जाएगी ।

प्रतीक : मुझे दीदी की बहुत याद आ रही है । वे घर पर रहती हैं तो घर में कितनी रौनक रहती है ? उनके बिना

❑ संवाद का मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के प्रमुख मुद्दों को स्पष्ट करें । कक्षा में संवाद का गुट में नाट्यीकरण करावाएँ । संचार के विविध माध्यमों एवं उनकी उपयोगिता पर चर्चा करें ।

सुनो तो जरा

यू ट्यूब/सी. डी. पर हिंदी कवि सम्मेलन की कविताएँ सुनो और सुनाओ ।

कैसा रक्षाबंधन ? उनके बिना मेरी आरती कौन उतारेगा ?

पिता जी : अच्छा तो ये बात है ? **(कुछ सोचते हैं...)** तो ठीक है, अब तुम खुश हो जाओ । तुम्हारी दीदी कल तुम्हारी आरती जरूर उतारेगी ।

प्रतीक : **(खुशी से उछलकर)** सच पिता जी ! दीदी मेरी आरती उतारेंगी ! पर कैसे ?

पिता जी : ये तुम मुझ पर छोड़ दो । खाना खाकर सो जाओ । कल दीदी तुम्हारी आरती अवश्य उतारेगी ।

(प्रतीक खाना खाकर सोने चला जाता है । प्रद्युम्न जाह्नवी को कुछ समझाते हैं । वह फोन पर प्रतीक की दीदी से काफी देर तक बात करती हैं ।)

माँ : अजी सुनते हो ! संगीता से बात हो गई है । वह तैयार है । आइए, आप भी खाना खाकर सो जाइए ।

पिता जी : खाना तो साथ ही खाएँगे । चलो कल की तैयारी में तुम्हारी कुछ मदद करता हूँ ।

दृश्य २

(दूसरे दिन सुबह के आठ बजे हैं । प्रतीक साफ-सुथरे कपड़े पहनकर तैयार है । पड़ोस में रहने वाली नूरजहाँ ने उसकी कलाई में राखी बाँध दी है । उसके माथे पर रोली-टीका लगा दिया है ।)

प्रतीक : कहाँ हैं दीदी ? मेरी आरती कब उतारी जाएगी ? **(प्रतीक मचल उठा ।)**

पिता जी : चिंता मत करो । तुम उस कुर्सी पर जाकर बैठ जाओ ।

(प्रतीक वैसा ही करता है । माँ संगणक के कुंजी पटल पर कुछ टाइप करती हैं । सामने स्क्रीन पर आरती की थाल लिए संगीता दिखाई पड़ती है ।)

प्रतीक : अरे वाह ! दीदी आ गई । प्रणाम दीदी । **(प्रतीक खुशी से झूम उठता है ।)**

दीदी : मेरे लाड़ले भैया ! खूब पढ़ो-खूब बढ़ो, बड़े बनो । अब सामने देखो । तुम्हारी आरती तो उतार लूँ ।

(संगीता ने प्रतीक की आरती उतारी । प्रतीक बहुत प्रसन्न था ।)

❑ संगणक प्रारंभ करने से लेकर ऑन लाईन बातचीत करने की की संगणकीय प्रक्रिया पर चर्चा करें । उक्त प्रक्रिया का अभ्यास करवाएँ । रेडियो, टी. वी. की क्रिकेट कमेंट्री की नकल कराएँ । 'मेरा प्रिय खिलाड़ी' विषय पर निबंध लेखन हेतु प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नया शब्द

खिन्न = दुखी

मुहावरे

मुँह लटकाना = नाराज होना

हाथ बँटाना = सहयोग देना

फफककर रोना = फूट-फूट कर रोना

मेरी कलम से

आकाशकंदील एवं राखी बनाने की विधियाँ क्रमशः लिखो ।

- सामग्री
- कृति

विचार मंथन

विश्वास की नींव पर ही रिश्ते मजबूत बनते हैं ।

वाचन जगत से

पंडित जवाहरलाल नेहरू जी द्वारा लिखित 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' पुस्तक पढ़ो ।

खोजबीन

रक्षा बंधन से संबंधित ऐतिहासिक कहानी यू ट्यूब/अंतरजाल पर खोजकर पढ़ो ।

स्वयं अध्ययन

अपने देश में 'सात बहनें' के नाम से प्रसिद्ध राज्यों को किन नामों से जाना जाता है, बताओ और लिखो :

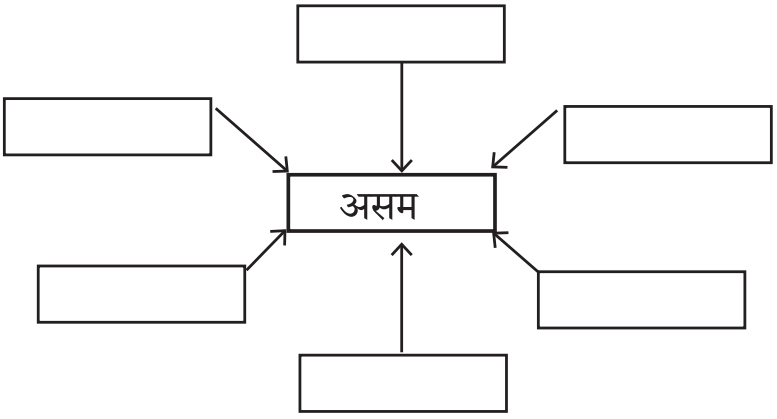

अध्ययन कौशल

किसी एक पाठ के आधार पर टिप्पणी लिखो ।

❊ **पाठ के आधार पर वाक्य का पहला हिस्सा लिखो :**

(क) ..... इसीलिए नहीं आ पा रही है । (ख) ..... मदद करता हूँ ।

सदैव ध्यान में रखो

विविधता में एकता हमारी सांस्कृतिक विरासत है ।

भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और अर्थ के अनुसार अन्य दो वाक्य बनाकर लिखो ।

१. विधानार्थक	अध्यापक कक्षा में पढ़ाते हैं । १ ..... २ .....
२. निषेधार्थक	स्वाति नक्षत्र की बूँद जब तक सीप में नहीं गिरती, मोती नहीं बनती । १ ..... २ .....
३. प्रश्नार्थक	क्या तुम दिए काम को कर सकोगे ? १ ..... २ .....
४. आज्ञार्थक	तुम्हें जो बताया गया है, उसे पूरा करो । १ ..... २ .....
५. संकेतार्थक	बारिश जो आज आए, तो बुआई अच्छी हो । १ ..... २ .....
६. विस्मयादिबोधक	तुमने जो खिलौना बनाया है, वह तो बहुत अच्छा है ! १ ..... २ .....
७. इच्छा बोधक	वह जैसा भी रहे, सुख से रहे । १ ..... २ .....
८. संदेश सूचक	बारात पहुँच चुकी होगी और शादी हो रही होगी । १ ..... २ .....

● सुनो, समझो और सुनाओ :

१०. दिव्यांग

– संजय भारद्वाज

जन्म : ३० नवंबर १९६५ पुणे (महा.) **रचनाएँ :** योंही, मैं नहीं लिखता कविता, चेहरे **(कविता संग्रह)**, एक भिखारिन की मौत **(नाटक)**
परिचय : हिंदी प्रचार-प्रसार में विशेष अभिरुचि, रंगमंच से जुड़ाव, प्रखर लेखक एवं वक्ता के रूप में जाने जाते हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने दृष्टि दिव्यांगों की अशक्ति-शक्ति को निरूपित करते हुए समाज से समदृष्टि अपनाने की अपेक्षा की है ।

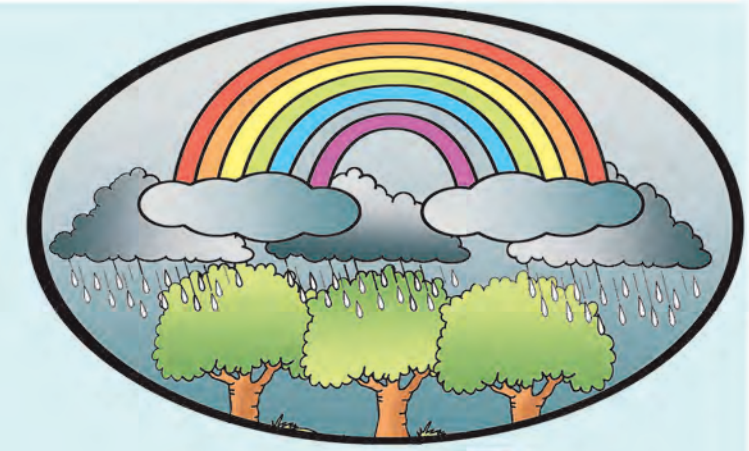

आँखें, जिन्होंने देखे नहीं
कभी उजाले
कैसे बुनती होंगी आकृतियाँ
भवन, झोंपड़ी
सड़क, फुटपाथ,
बादल, बारिश,
चूल्हा, आग,
पेड़, घास
धरती या आकाश की,
'रंग' शब्द से
कौन-से चित्र बनते होंगे
मन के दृष्टिपटल पर,
भूकंप से कैसा विनाश चितरता होगा,
बाढ़ की परिभाषा क्या होगी,
इंजेक्शन लगने से पहले भय से आँखें मूँदने का
विकल्प क्या होगा,
आवाज को घटना में बदलने का
पैमाना क्या होगा,
कुछ भी हो, इतना निश्चित है
ये आँखें बुन लेती हैं अद्वैत भाव,
समरस हो जाती हैं प्रकृति के साथ,
काश हो पाती वे आँखें भी
अद्वैत और समरस
जो देखती तो हैं उजाले
पर बुनती रहती हैं अँधेरे !

❑ उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह के साथ कविता का पाठ करें । उचित तान-अनुतान के साथ कविता का पाठ करवाएँ। कविता में आए भाव एवं विचारों को प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से स्पष्ट करें । इस प्रकार की कोई कविता लिखवाएँ ।

● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

११. रोजी और निक्की

–महादेवी वर्मा

जन्म : २६ मार्च १९०७ फरुक्खाबाद (उ.प्र) **मृत्यु :** ११ सितंबर १९८७ **रचनाएँ :** यामा, मेरा परिवार, पथ के साथी, अतीत के चलचित्र
परिचय : महादेवी वर्मा जी कवयित्री, स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद के रूप से प्रसिद्ध हैं । आपके रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध भी प्रसिद्ध हैं । इन रेखाचित्रों के माध्यम से लेखिका ने अपने बचपन की मधुर स्मृतियों एवं प्राणियों के स्वभाव को चित्रित किया है ।

खोजबीन

विभिन्न पशु-पक्षियों के आवास पर चर्चा करते हुए उनके निर्माण की विधि अंतरजाल की सहायता से प्राप्त करो ।

खोजबीन के लिए आवश्यक सोपान :

विद्यार्थियों ने कौन-कौन-से आवास देखे हैं, बताने के लिए प्रोत्साहित करें ।
- आवास की आवश्यकता, महत्त्व तथा उनके प्रकार पर चर्चा करें ।
- आवास संबंधी जानकारी हम कहाँ-कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं, पूछें ।
- अंतरजाल से उपयोगी जानकारी समझकर उसको डाउनलोड करने के लिए कहें ।
- सूचनाओं/जानकारियों की सुरक्षा पर मार्गदर्शन करते हुए प्रयोग करवाएँ ।

मेरे अतीत बचपन के कोहरे में जो रेखाएँ अपने संपूर्ण महत्त्व के विविध रंगों में उदय होने लगती हैं, उनके आधारों में तीन ऐसे भी जीव हैं, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी मेरी स्मृति में छुपे-से हैं । वे हैं निक्की नेवला, रोजी कुतिया और रानी घोड़ी ।

रोजी की जैसे ही आँखें खुलीं, वैसे ही वह मेरे पाँचवें जन्मदिन पर पिता जी के किसी राजकुमार विद्यार्थी द्वारा मुझे उपहार रूप में भेंट कर दी गई । स्वाभाविक ही था कि हम दोनों साथ ही बढ़ते रहे । रोजी मेरे साथ दूध पीती, मेरे खटोले पर सोती, मेरे लकड़ी के घोड़े पर चढ़कर घूमती और मेरे खेल-कूद में साथ देती । रोजी सफेद थी किंतु उसके छोटे सुडौल कानों के कोने, पूँछ का सिरा, माथे का मध्य भाग और पंजों का अग्रांश कत्थई रंग का होने के कारण कत्थई किनारीवाली सफेद साड़ी की सबल रंगीनी का आभास मिलता था । वह छोटी पर तेज टैरियर जाति की कुतिया थी । हम सबने उसे ऐसा साथी मान लिया था, जिसके बिना न कहीं जा सकते थे और न कुछ खा सकते थे ।

सबसे छोटा भाई तो हमारी व्यस्तता में साथ देने के लिए बहुत छोटा था परंतु मैं, मुझसे छोटी बहिन और उससे छोटा भाई दोपहर भर बया चिड़ियों के घोंसले

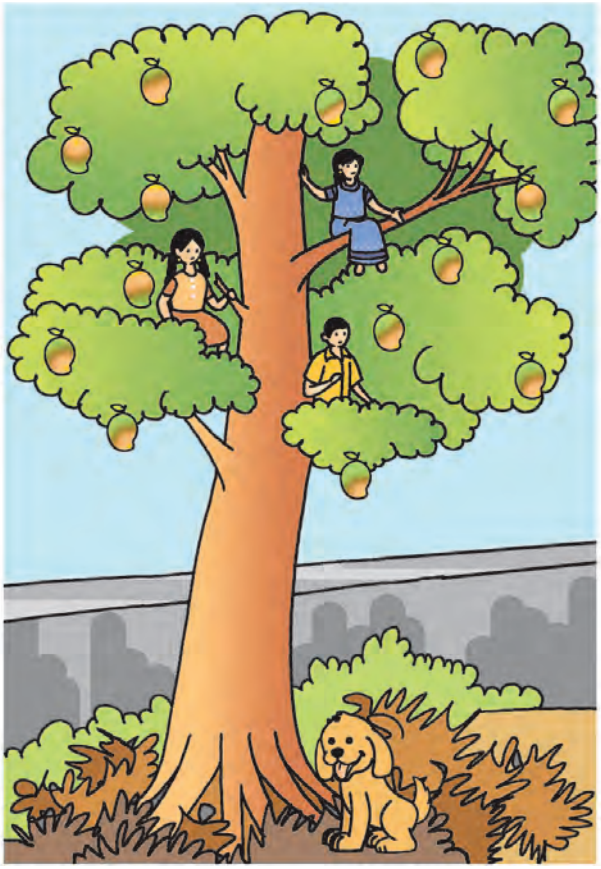

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ रेखाचित्र का मुखर वाचन करवाएँ । चर्चा एवं प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के प्रमुख मुद्दों को स्पष्ट करें । विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए पाठ की किसी घटना को कहानी में रूपांतरित करके सुनाने के लिए कहें ।

वाचन जगत से

पक्षी प्रेमी सलीम अली की पुस्तक का कुछ अंश पढ़ो और कक्षा में चर्चा करो ।

देखते, बबूल की सूखी और बीजों के कारण बजने वाली छीमियाँ बीनते घूमते रहते ।

घूमते-घूमते थक जाने पर हमारा प्रिय विश्रामालय एक आम के वृक्षों से घिरा सूखा पोखर था, जिसका ऊँचा कगार पेड़ों की छाया में आठ-नौ फुट और खुली धूप में चार-पाँच फुट के लगभग गहरा था । कई आम के पेड़ों की शाखाएँ लंबी-नीची और सूखे पोखर पर झूलती थीं । सूखी पत्तियों ने झड़-झड़कर सूखी गहराई को कई फुट भर भी डाला था । हम डाल पर बैठकर झूलते रहते । घूमने के क्रम में यदि हमें कोई मकोई का पौधा या करौंदे की झाड़ी फूली-फली मिल जाती तो नंदनवन की प्रतीति होने लगती ।

हमारे इस भ्रमण में रोजी निरंतर साथ देती । जब हम डाल पर बैठकर झूलते रहते, वह कगार के सिरे पर हमारे पैरों के नीचे बैठी कूदने के आदेश की आतुर प्रतीक्षा करती रहती । जब हम पोखर की परिक्रमा करते, वह हमारे आगे-आगे मानो राह दिखाने के लिए दौड़ती और जब हम मकोई और करौंदे एकत्र करने लगते, तब वह किसी झाड़ी की छाया में बड़े विरक्त भाव से बैठी रहती । गर्मी के दिनों में आम के पेड़ों से छोटी-बड़ी अंबियाँ हवा के झोंके से नीचे गिरती रहतीं और पत्तियों के सरसराहट भरे समुद्र में से उसे वह खोज लाती । कच्ची कैरी की चेपी लग जाने से बेचारी का गुलाबी छोटा मुँह धबीला हो जाता परंतु वह इस खोज कार्य से विरत न होती ।

दोपहर को पिता जी कालेज में रहते और माँ घर के कार्य में या छोटे भाई की देखभाल में व्यस्त रहतीं । रामा बाजार चला जाता और कल्लू की माँ या तो सोती या माँज-माँजकर बर्तन चमकाने में दत्तचित्त रहती । वे सब समझते कि हम लोग या तो अपने कमरे में सो रहे हैं या पढ़-लिख रहे हैं । हम कुछ ऊँची खिड़की की राह

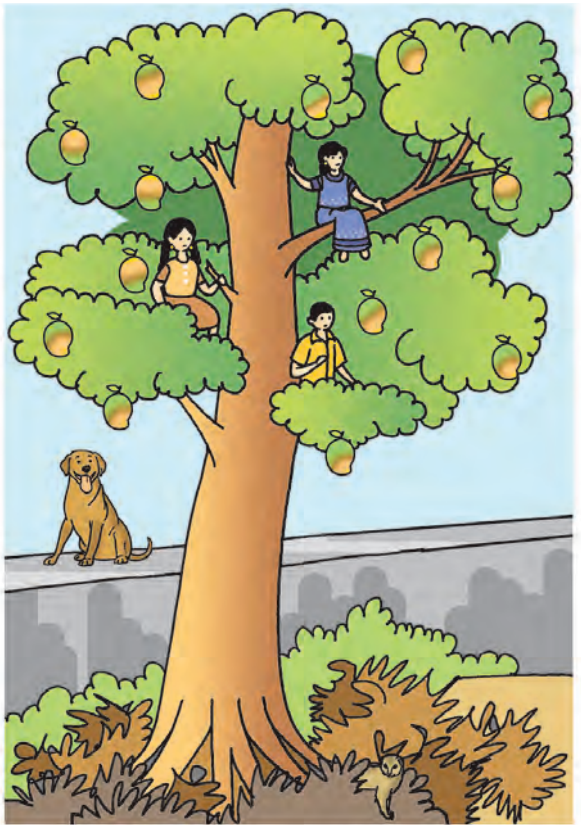

से पहले रोजी को उतार देते और फिर एक-एक करके तीनों बाहर बगीचे में उतरकर करौंदे की झाड़ियों में छिपते-छिपते अपने उसी सूने मुक्तिलोक में पहुँच जाते । तीनों में से किसी को भी कमरे में छोड़ना शंका से रहित नहीं था क्योंकि वह बिस्कुट, पेड़ा, बर्फी आदि किसी भी उत्कोच के लोभ में मुखबिर बन सकता था । परिणामतः तीनों का जाना अनिवार्य था । रोजी भी हमारे निर्बंध संप्रदाय में दीक्षित हो चुकी थी; अतः वह भी साथ आती थी । हमारे अभियान के रहस्य को वह इतना अधिक समझ गई थी कि दोपहर होते ही खिड़की से कूदने को आकुल होने लगती और खिड़की से उतार दिए जाने पर नीचे बैठकर मनोयोगपूर्वक हमारा उतरना देखती रहती । कभी खिड़की से कूदते समय हममें से कोई उसी के ऊपर गिर पड़ता था पर वह चीं करना भी नियम विरुद्ध मानती थी ।

❑ विद्यार्थियों से रेखाचित्र के आधार पर रोजी के बारे में आठ से दस वाक्य लिखवाएँ । अपनी पसंद के किसी प्राणी के बारे में बारह से पंद्रह पंक्तियों का निबंध लिखने के लिए प्रेरित करें । पाठ में आए कारक चिह्नों का प्रकारानुसार वर्गीकरण कराएँ ।

अध्ययन कौशल

किसी लेखक/कवि का परिचय पाने के लिए संकेत स्थल की जानकारी प्राप्त करो ।

ऐसे ही एक स्वच्छंद विचरण के उपरांत जब हम आम की डाल पर झूल-झूलकर अपने संग्रहालय का निरीक्षण कर रहे थे तब एक आम गिरने का शब्द हुआ और रोजी नीचे कूदी । कुछ देर तक वह पत्तियों में न जाने क्या खोजती रही फिर हमने आश्चर्य से देखा कि वह मुँह में किसी जीव को दबाए हुए ऊपर आ रही है । उस कुलबुलाते जीव को भी सुरक्षित हम तक ले आई । आकार में वह गिलहरी से बड़ा न था। भूरा चमकीला रंग, काली कत्थई आँखें, नर्म-नर्म गुलाबी नन्हा मुँह, रोओं में छिपे हुए नन्ही सीपियों से कान, सब कुछ देखकर हमें वह जीवित नन्हा खिलौना-सा जान पड़ा । रोजी ने उसे हौले से पकड़ा था परंतु बचने के संघर्ष में उसको कुछ खरोंच लग गई थी । चोट से अधिक भय से वह निश्चेष्ट था । उसे पाकर हम सब इतने प्रसन्न हुए कि उसे लेकर हम तुरंत घर की ओर भागे । वह एक नकुल शिशु था । उसका नाम हमने निक्की रखा । अब तो उस लघु प्राणी का हमारे अतिरिक्त कोई आश्रय ही नहीं रहा ।

उस समय की उत्तेजना में हम अपने अज्ञात भ्रमण की बात भी भूल गए परंतु माँ ने यह नहीं पूछा कि वह छोटा जीव हमें कहाँ और कैसे मिला । उन्होंने जीवजंतुओं को न सताने के संबध में लंबा उपदेश देने के उपरांत उसे उसके नकुल माता-पिता के पास बिल में रख आने का आदेश दिया । अतः नकुल शिशु के बिल और बिल निवासी माता-पिता की खोज में हम अनिच्छापूर्वक गए और खोज में असफल होकर निराश से अधिक प्रसन्न लौटे ।

प्रसन्नतापूर्वक हमने अपने खिलौनों के छोटे बक्स को खाली कर उसमें रूई और रेशमी रूमाल बिछाया । फिर बहुत अनुनय-विनय और सब आदेश मानने का वचन देकर रामा को, उसे रूई की बत्ती से दूध पिलाने के लिए राजी किया । इस प्रकार हमारे लघु परिवार में एक लघुतम सदस्य सम्मिलित हुआ । रामा की सतर्क देख-रेख में वह कुछ दिनों में स्वस्थ और पुष्ट होकर हमारा समझदार साथी हो गया । पालने की दृष्टि से नेवला बहुत स्नेही और अनुशासित जीव है । वह अपने पालने वाले के साथ चौबीसों घंटे रह सकता है । जेब में, कंधे पर आस्तीन में, बालों में, जहाँ कहीं भी उसे बैठा दिया जाए, वह शांत स्थिर भाव से बैठकर अपनी चंचल पर सतर्क आँखों से चारों ओर की स्थिति देखता, परखता रहता है । निक्की मेरे पास ही रहता था ।

निक्की या तो मेरे दुपट्टे की चुन्नट में छिपा हुआ रहता या गर्दन के पीछे चोटी में छिपकर बैठता और कान के पास नन्हा मुँह निकालकर चारों ओर की गतिविधि देखता । रोजी का कार्य तो हमारे साथ दौड़ना ही था परंतु निक्की इच्छा होने पर ही अपने सुरक्षित स्थान से कूदकर दौड़ता । एक दिन जैसे ही हम खिड़की से नीचे उतरे, वैसे ही निक्की की सतर्क आँखों ने गुलाब की क्यारी के पास घास में एक लंबे काले साँप को देख लिया और वह कूदकर उसके पास पहुँच गया । हमने आश्चर्य से देखा कि निक्की पिछले दो पैरों पर खड़ा होकर साँप को मानो चुनौती दे रहा है और साँप भी हवा में आधा उठकर फुफकार रहा है ।

उस दिन प्रथम बार हमें ज्ञात हुआ कि हमारा बालिश्त भर का निक्की कई फुट लंबे साँप से लड़ सकता है । उन दोनों की लड़ाई मानो पेड़ की हिलती डाल से बिजली का खेल थी । साँप जैसे विषधर को खंड-खंड करने की शक्ति रखने पर भी नेवला नितांत निर्विष है । यदि साँप चाहे तो उसे अपनी कुंडली में लपेटकर चूर-चूर कर डाले । फण के फूत्कार से मूर्च्छित कर दे परंतु वह नेवले के फूल से हल्केपन और बिजली जैसी गति से परास्त हो जाता है ।

❑ इस पाठ में आए वर्ग के आधार पर वर्णमाला के शब्द ढूँढ़कर लिखवाएँ । इन शब्दों में कौन-कौन-से पंचमाक्षर आए हैं, इन्हें भी लिखवाएँ । इनमें से पाँच शब्दों के वाक्य प्रयोग करवाएँ । संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द ढूँढ़कर सूची बनाने के लिए कहें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

श्वान = कुत्ता
नकुल = नेवला
दुर्लभ = कठिनाई से प्राप्त
छीमियाँ = फलियाँ
विश्रामालय = आराम घर
पोखर = तालाब
चेपी = आम के ऊपर का चिपचिपा पदार्थ
मकोई = गिलोय
उत्कोच = लालच, घूस
आस्तीन = जेब
बालिश्त = बित्ता
निर्विष = विषहीन
फुफकार = फुंकार

विचार मंथन

।। स्नेह ही स्नेह का पुरस्कार है ।।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

गणित विषय से शून्य गायब हो जाए तो .....

मेरी कलम से

अपने बचपन की कोई स्मरणीय घटना लिखो ।

बताओ तो सही

प्राणियों के गुण/स्वभाव की विशेषता समझो और कौन-से गुण तुम्हारे जीवन में उपयोगी हैं, बताओ :

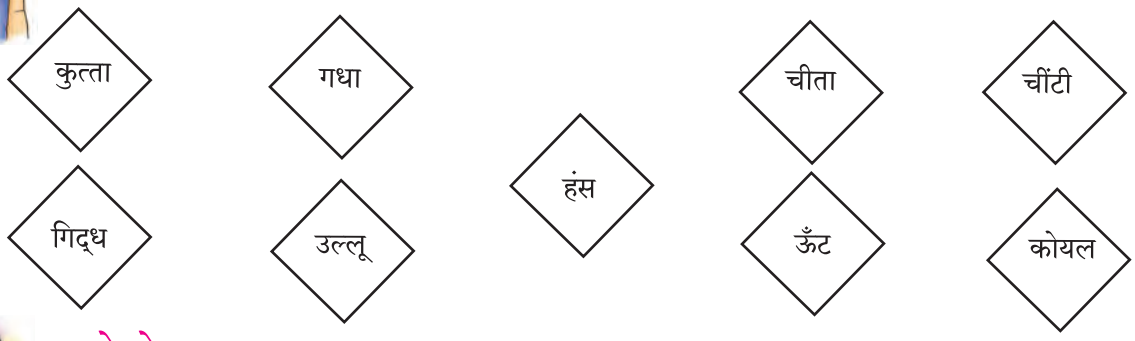

सुनो तो जरा

अपने परिवेश में मनाए गए किसी सामाजिक कार्यक्रम की रिपोर्ताज बनाकर सुनाओ :

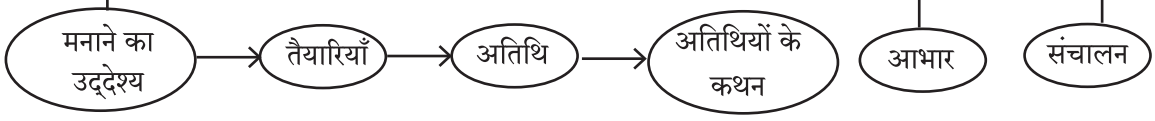

स्वयं अध्ययन

पशु चिकित्सक का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्न निर्मिति करो :

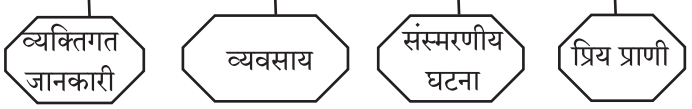

❊ **वाक्यों के क्रम का आकलन करके उनके उचित क्रम के वर्णांक रिक्त स्थान में लिखो :**

(क) निक्की मेरे पास ही रहता था ।
(ख) वह छोटी पर तेज टैरियर जाति की कुतिया थी ।
(ग) वह एक नकुल शिशु था ।
(घ) हमारे इस भ्रमण में रोजी निरंतर साथ देती थी ।

(१) ..... (२) ..... (३) ..... (४) .....

सदैव ध्यान में रखो

पशु-पक्षी भी मनुष्य की भाँति भावनाओं से परिपूर्ण होते हैं ।

भाषा की ओर

सूचनानुसार मुहावरे एवं कहावतें लिखो :

❊ निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त मुहावरों के स्थान पर इनके समानार्थक नए मुहावरे कोष्ठक में से प्रयुक्त करो –

(कान पर जूँ न रेंगना, आग बबूला होना, नौ दो ग्यारह होना)

(१) पुलिस को देखते ही चोर **रफूचक्कर हो गया ।**

(२) अध्यापक ने उसे बहुत समझाया, परंतु वह **आँखें बंद करके ही बैठी रही ।**

(३) कक्षा में शोर होता देख प्रधानाचार्य महोदय **लाल-पीले हो गए ।**

❊ निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त रिक्त स्थानों पर उचित कहावतें कोष्ठक में से प्रयुक्त करो –

(अपना हाथ जगन्नाथ, नेकी कर दरिया में डाल, दूर के ढोल सुहावने)

(१) मैं समझता था कि शहर की जिंदगी गाँव से कहीं अच्छी होगी पर यहाँ तो कुछ भी नहीं है- सच है कि, ...

(२) सुनेत्रा ने अपनी कड़ी मेहनत से साबित कर दिया कि .....

(३) हमें उपकार के बदले कुछ अपेक्षा नहीं होनी चाहिए, बस .....

❊ **दिए गए अनुसार निम्न शब्द पहेली से मुहावरे और कहावतें ढूँढ़ो और उनके समानार्थक मुहावरे/कहावतें अपने मन से लिखो :-**

(एक शब्द का आवश्यकतानुसार एक से अधिक बार उपयोग कर सकते हैं ।)

छोटा	के	टस	जली	छठी	आम	चल	फूलकर	सहारा	मजा
ऊँट	पहाड़	न	भैंस	कुप्पा	से	जमाना	जाए	टूटना	को
होना	रंग	अधजल	का	सुनाना	आना	में	करना	की	कटी
गोद	अक्षर	हाथ	याद	चिराग	पसीना	मस	तिल	बच्चा	एक
दूध	चोर	खून	आना	क्या ?	का	गगरी	जीरा	दाँत	बेलना
गाँव	रहेगा	ताड़	दाढ़ी	बनाना	खाना	बाँस	पीसना	कंगन	बात
आरसी	रफूचक्कर	गुठलियों	छलकत	बड़ी	तिनका	ढिंढोरा	चखाना	बाँसुरी	दाम
बराबर	काला	मुँह	तले	डूबते	की	अँधेरा	तिनके	पापड़	बजेगी

● सुनो, समझो और पढ़ो :

१२. स्कूल चलो

– देवेंद्र कुमार

जन्म : १९ अगस्त १९४० दिल्ली **रचनाएँ :** एक छोटी बाँसुरी, खिलौने, पेड़ नहीं कट रहे हैं आदि **परिचय :** २७ वर्ष नंदन पत्रिका से जुड़े रहे । हिंदी अकादमी तथा बालसाहित्यकार के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित बाल उपन्यासकार, अनुवादक एवं कहानीकार रहे हैं ।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने शिक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए बताया है कि शिक्षा किसी भी उम्र में प्राप्त की जा सकती है ।

अध्ययन कौशल

संगणकीय शिष्टाचार ज्ञात करो और कक्षा में चर्चा करो ।

आखिरी बच्चा भी रिक्शा से उतरकर चला गया । भरतू की ड्युटी खत्म हो गई थी लेकिन अभी पूरी तरह नहीं । साइकिल रिक्शा की सीट से उतरकर उसने पीछे झाँका तो अंदर एक किताब पड़ी दिखाई दी । अंदर का मतलब रिक्शा के पीछे एक कैबिन जुड़ा है । उसमें छोटे बच्चे बैठते हैं । भरतू ने बड़बड़ाते हुए किताब उठा ली और उलट-पलटकर देखने लगा । हर रोज ऐसा ही होता है । कोई-न-कोई बच्चा कुछ न कुछ भूल जाता है । रूमाल, पानी की बोतल या फिर किसी की कैप रह जाती है ।

वह जब भी किसी किताब को हाथ में उठाता है तो मन में एक चिढ़ होती है अपने लिए । आखिर वह अनपढ़ क्यों रह गया । पढ़-लिख जाता तो आज रिक्शा खींचने की जगह कोई ढंग का काम करता लेकिन ... अब इस सब को याद करने से क्या फायदा ?

रिक्शा को ढाबे के बाहर खड़ा करके भरतू खाना खाने बैठ गया । किताब अब भी उसके हाथ में थी । तभी आवाज सुनाई दी, ''क्यों भरतू, स्कूल में दाखिला ले लिया क्या ?''

भरतू ने चौंककर देखा, उसका साथी रमन हँसता हुआ किताब की ओर इशारा कर रहा था । भरतू लजा गया । बोला, ''अरे, जब पढ़ने की उम्र थी तब नहीं पढ़ सका तो अब क्या पढ़ूँगा ।'' फिर उसने बताया कि कोई बच्चा उसकी रिक्शागाड़ी में किताब भूल गया है ।

भरतू, रमन तथा और चार लोग एक किराए के कमरे में रहते हैं । सभी अपने-अपने गाँव से रोजगार की तलाश में शहर आए हैं । सभी के परिवार गाँव में हैं । वे उनको पैसे भेजते रहते हैं । रमन साक्षर है । भीम ऐप से वह सबके पैसे भेज दिया करता है । बीच-बीच में कुछ दिन के लिए घरवालों से मिलने गाँव जाते हैं । भरतू स्कूल के बच्चों को लाता-ले जाता है । उसके साथी सवारी ढोते हैं । वे लोग भरतू की रिक्शा को 'चिड़ियाखाना' कहते हैं पर भरतू ने उसका नाम रखा है -'गुलदस्ता' । जब बच्चों को लेकर रिक्शा चलाता है तो उसे सचमुच बहुत अच्छा लगता है । रह-रहकर अपने गाँव-घर की याद आती है । कभी-कभी लगता है, जैसे उसका बेटा नन्हा भी दूसरे बच्चों के साथ बैठा स्कूल जा रहा है ।

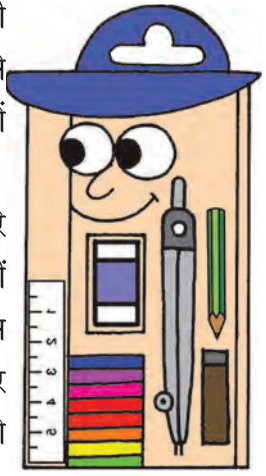

भरतू सब बच्चों के चेहरे पहचानता है पर उसे याद नहीं आ रहा था कि किताब किस बच्चे की थी । वैसे किताब पर नाम लिखा था पर भरतू को

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी के भाव एवं विचार स्पष्ट करें । उन्हें अपने विद्यालय की विशेषताएँ बताने के लिए कहें ।

वाचन जगत से

बाल पत्रिका से कोई कहानी पढ़ो और परिपाठ में सुनाओ ।

पढ़ना कहाँ आता है । उस रात भरतू ने सपने में देखा, जैसे वह मैदान में बैठा है और उसके सामने एक लंबी-चौड़ी किताब खुली पड़ी है । तभी एक आवाज कानों में आती है । लाओ मेरी किताब फिर भरतू की नींद टूट गई । जागकर वह बहुत देर तक सपने के बारे में सोचता रहा ।

सुबह अपनी रिक्शा बाहर निकाली और बारी-बारी से बच्चों को लेने लगा । तभी रमेश नामक बच्चे ने कहा, ''मेरी किताब...?'' वह कुछ परेशान दिख रहा था । रमेश की माँ सरिता ने भी कहा, ''भरतू, जरा ध्यान से देखना, रमेश की किताब नहीं मिल रही हैं ।''

भरतू ने किताब उनकी ओर बढ़ा दी । तभी रमेश ने कहा, ''तुमने मेरी किताब फाड़ी तो नहीं । किताब फाड़ना बुरी बात है ।'' सुनकर भरतू हँस पड़ा । उसने कहा, ''नहीं भैया, मैंने तुम्हारी किताब खूब ध्यान से रखी थी । एकदम ठीक है, देख लो ।''

रमेश की माँ सरिता देवी भी हँस पड़ीं । उन्होंने कहा, ''भरतू जो बात मैं इसे समझाती हूँ, वही इसने तुमसे कह दी । बुरा न मानना ।''

सारा दिन भरतू उसी किताब के बारे में सोचता रहा । दोपहर में रमेश को उसके घर के बाहर छोड़ते हुए भरतू ने कहा, ''क्यों भैया, जो तुम पढ़ते हो, मुझे भी पढ़ा दो ।'' ''मैं क्या टीचर हूँ जो तुम्हें पढ़ाऊँ ?'' रमेश बोला । ''मेरे टीचर बन जाओ न रमेश भैया । जो फीस माँगोगे दूँगा ।'' भरतू ने हँसकर कहा । ''ठीक है, कल पढ़ाऊँगा ।'' ''क्या पढ़ाओगे ?''

''ए, बी .... पढ़ाऊँगा ।'' कहकर रमेश माँ के साथ घर में चला गया । भरतू मुसकराया तो सरिता देवी भी हँस पड़ीं ।

अगले दिन रमेश ने भरतू से कहा, ''भरतू भैया, आज मैं तुम्हारे लिए ए और बी लाया हूँ ।'' और उसने बस्ते से निकालकर एक सेब और गेंद भरतू के हाथ में थमा दी । भरतू कुछ पूछता, इससे पहले रमेश ने कहा, ''देखो ए से एप्पल, बी से बॉल ।''

भरतू ने कहा, ''रमेश भैया, क्या रोज ऐसे ही पढ़ाओगे ?''

रमेश ने कहा, ''हाँ '' और माँ के साथ घर में दौड़ गया । भरतू सेब और गेंद को हाथ में लिये खड़ा रह गया । उसने सोचा, कल दोनों चीजें वापस कर देगा । उस रात देर तक ए और बी से खेलते रहे भरतू और उसके साथी । उनके बीच देर तक गेंद और सेब इधर से उधर उछलते रहे । कमरे में हँसी गूँजती रही । शायद इससे पहले ये लोग इतना कभी नहीं हँसे थे । भरतू के साथी पूछते रहे, ''भरतू कल अपने मास्टर जी से क्या पढ़ेगा ?''

अगली सुबह रमेश के घर के बाहर पहुँचकर भरतू ने रिक्शा की घंटी बजाई । कुछ देर तक कोई जवाब नहीं मिला फिर रमेश की माँ सरिता देवी बाहर निकलकर आईं । उन्होंने कहा, ''रमेश आज स्कूल नहीं जाएगा । उसे रात से बुखार आ रहा है ।''

सुनकर भरतू को एक झटका सा लगा । वह बाकी बच्चों को स्कूल पहुँचाने चला गया । उस दोपहर वह गुमसुम रहा । ठीक से खाना भी नहीं खाया भरतू ने । रमन बार-बार पूछता रहा, ''भरतू, क्या बात है ?'' पर भरतू ने कुछ नहीं कहा ।

❑ कहानी में आए उनकी पसंद के सबसे सुंदर प्रसंग बताने के लिए कहें । पसंद के कारण पूछें । उनके शब्दों में कहानी कहने के लिए प्रेरित करें । कहानी में आए भूत, वर्तमान और भविष्यकाल के एक-एक वाक्य खोजकर लिखने के लिए कहें ।

स्वयं अध्ययन

किसी शालेय समारोह के कार्यक्रम में अध्यक्ष जी के परिचय देने हेतु जानकारी तैयार करे ।

नाम → जन्मस्थान → शिक्षा → कार्यक्षेत्र → विशेषताएँ → प्राप्त पुरस्कार

इसके बाद वाली सुबह को रमेश के दरवाजे पर पहुँचकर उसने घंटी बजाई तो रमेश की माँ बाहर आईं । ''भरतू, रमेश की तबीयत आज भी ठीक नहीं है । शायद एक-दो दिन और वह स्कूल न जा सकेगा ।''

भरतू के हाथ में ए और बी यानी सेब और गेंद थे । उसने सरिता देवी से कहा, ''ये दोनों मेरे मास्टर जी को दे देना, मैडम जी । अब तो मुझे पढ़ाएँगे नहीं ।''

सरिता देवी आश्चर्य से मुरझाए सेब और गेंद को देखती रहीं । फिर भरतू ने उन्हें सब बताया तो उनके चेहरे पर फीकी मुसकान आ गई । लेकिन भरतू हँस न सका । उसने स्कूल वाली रिक्शा आगे बढ़ा दी ।

उस दोपहर भरतू ढाबे पर नहीं आया । वह रमेश के घर के बाहर जा खड़ा हुआ । आसपास कोई न था । वह कुछ देर तक धूप में खड़ा रहा, फिर झिझकते हुए दरवाजे पर लगी घंटी बजा दी । कुछ पल ऐसे ही बीत गए । उसे दोबारा घंटी बजाना ठीक न लगा । न जाने रमेश की माँ क्या सोचने लगे । उसका मन रमेश से मिलना चाहता था पर संकोच भी था । वह वापस मुड़ने लगा, तभी दरवाजा जरा-सा खोलकर सरिता देवी ने बाहर झाँका । भरतू को देखकर वह चौंक पड़ीं । उन्होंने कहा, ''भरतू, तुम इस समय कैसे ? क्या चाहिए ?''

भरतू सकपका गया । हकलाता-सा बोला, ''जी, मैंने सोचा अपने मास्टर जी को देख लूँ, उनकी तबीयत कैसी है ?''

मास्टर जी शब्द पर सरिता देवी हँस पड़ीं । उन्होंने कहा, ''भरतू, तुम्हारे मास्टर जी की तबीयत अब ठीक है । आओ, अंदर आ जाओ, धूप में क्यों खड़े हो ?'' यह कहकर उन्होंने दरवाजा पूरा खोल दिया । भरतू को लग रहा था, इस समय आना शायद ठीक नहीं रहा पर अब वापस नहीं लौटा जा सकता था । वह झिझकते कदमों से अंदर घुस गया । ''आओ भरतू, यहाँ आओ ।'' कहते हुए सरिता देवी ने एक कमरे में आने का इशारा किया ।

भरतू ने कहा, ''मैडम जी, अब आपने बता दिया न कि हमारे मास्टर जी ठीक हैं । बस अब जाता हूँ । आप तकलीफ न करें ।''

''नहीं, नहीं, तकलीफ कैसी ! तुम अपने मास्टर जी से मिलने आए हो तो क्या बिना मिले चले जाओगे ? आ जाओ । इतना घबरा क्यों रहे हो ?''

''कैसे हो मास्टर जी ?'' कहते-कहते भरतू हँस पड़ा, उसने देखा, सेब और गेंद पलंग पर रमेश के पास रखे थे । ''मैं ठीक हूँ ।'' रमेश ने कहा, फिर बोला, ''तुमने ए, बी माँ को लौटा दिए । ऐसे कैसे पढ़ोगे ! लो, ले जाओ और ध्यान से याद करो । तभी तो आगे पढ़ाऊँगा तुम्हें ।''

''भरतू, खड़े क्यों हो ? बैठ जाओ ।'' सरिता देवी ने कहा । उनके हाथ में पानी का गिलास और प्लेट में कुछ नाश्ता था ।

भरतू जमीन पर ही बैठ गया । सरिता ने कहा, ''वहाँ जमीन पर नहीं, कुरसी पर आराम से बैठो ।''

''जी, मैं यहीं ठीक हूँ ।'' भरतू ने कहा और उठ खड़ा हुआ । उसने कुछ खाया नहीं । ''मास्टर जी जल्दी ठीक हो जाओ, फिर आगे पढ़ाना ।'' कहकर सेब और गेंद रमेश के हाथ से ले ली और बाहर निकल आया ।

❑ कहानी के अनुसार भरतू के स्वभाव का वर्णन कहलवाएँ । कहानी में आए विशेषण शब्दों की पहचान करवाएँ । पाठ में आए किन्हीं दस शब्दों के समानार्थी, विरूद्धार्थी शब्द लिखवाएँ तथा उनका अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करवाएँ ।

बताओ तो सही

अंत में रमेश के घर से 'वापस आने पर भरतू के मन की भावनाएँ', बताओ ।

रमेश की तबीयत ठीक देखकर उसका मन खुश हो गया था । एक बार मन में आया था कि हौले से रमेश का सिर सहला दे पर हिम्मत न हुई । बाहर निकलते हुए सरिता देवी की आवाज सुनाई दी, ''भरतू, कल रमेश को लेने आ जाना, अब इसकी तबीयत ठीक है ।''

अगली सुबह रमेश माँ के साथ घर से बाहर खड़ा मिला । भरतू से नजरें मिलते ही रमेश और उसकी माँ मुसकरा दिए । भरतू भी हँस दिया ।

दोपहर को रमेश को घर छोड़ने आया तो सरिता देवी ने कहा, ''भरतू, शाम को पाँच बजे आना । आ सकोगे ? बहुत काम तो नहीं रहता ?''

''जी आ जाऊँगा ।'' भरतू ने कहा और ढाबे पर जा बैठा । मन प्रसन्न था । रमन ने पुकारा, ''क्यों भरतू, पढ़ाई कैसी चल रही है ?''

''बहुत बढ़िया ।'' भरतू ने कहा और हँस दिया ।

भरतू पाँच बजे रमेश के घर के बाहर पहुँच गया । कुछ देर बिना घंटी बजाए सोच में डूबा खड़ा रहा । मन में कुछ डर था । न जाने रमेश की माँ ने क्यों बुलाया है ?

कुछ देर बाद उसने घंटी बजा ही दी । दरवाजा रमेश ने खोला उसे देखते ही हँस पड़ा । बोला, ''आओ भरतू, आओ, अंदर चलो ।'' कहकर रमेश ने भरतू का हाथ पकड़ लिया और उसी कमरे में ले गया ।

सरिता देवी कुरसी पर बैठी थीं । उन्होंने कहा, ''भरतू, यहाँ बैठो । रमेश बता रहा था, तुम पढ़ना चाहते हो ? अगर ऐसा है तो बहुत अच्छी बात है ।'' भरतू लजा गया । बोला, ''मैडम जी, यह तो मैंने यूँ ही मजाक में कह दिया था । भला अब क्या पढ़ूँगा मैं । हाँ, गाँव के स्कूल में मेरा बेटा नन्हा जरूर पढ़ता है ।''

''भरतू, तुम्हारे घर में कौन-कौन हैं ?'' सरिता देवी ने पूछा । भरतू उन्हें अपने गाँव-घर की बातें बताने लगा । न जाने क्या-क्या बता गया फिर एकाएक रुक गया । बोला, ''माफ करना मैडम जी, मैं तो यूँ ही कह रहा था । भला ये भी कोई बताने की बातें हैं ।''

''अरे नहीं-नहीं, मुझे तो तुम्हारी बातें सुनकर बहुत अच्छा लगा और बताओ । असल में मैं तो कभी गाँव गई नहीं । वहाँ लोग कैसे रहते हैं, क्या करते हैं, केवल किताबों से पता चलता है या फिल्मों से ।''

भरतू उठने को हुआ पर सरिता देवी ने रोक लिया । बोली, ''मैंने जिस बात के लिए बुलाया था, वह तो अभी कही ही नहीं । तुम पढ़ना चाहते हो, सुनकर मुझे अच्छा लगा । रमेश के पापा को भी पसंद आई यह बात ।''

''मैडम जी, वह तो मैंने ऐसे ही हँसी में कह दी थीं ।'' भरतू ने संकोच से कहा ।

''नहीं, इसमे संकोच कैसा ? अगर तुम चाहो तो शाम को पाँच बजे रोज आ सकते हो । मैं पढ़ाऊँगी तुम्हें । शादी से पहले मैं बच्चों को पढ़ाया करती थी । अब भी मन करता है कोई ऐसा काम करने का ।''

''पर भरतू तो बड़ा है माँ,'' रमेश ने कहा । ''पहले बच्चों को पढ़ाती थी तो अब बड़ों को पढ़ाऊँगी । भरतू से ही शुरू होगा यह मेरा स्कूल ।''

''तो क्या मुझे आप सचमुच पढ़ाएँगी ?'' भरतू ने पूछा । उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था ।

''हाँ भरतू, मैं सच कह रही हूँ । जिस दिन मुझे कोई काम नहीं होगा तो मैं तुम्हें बता दूँगी, जब तुम रमेश को छोड़ने आओगे । उस दिन तुम पढ़ने आ जाना ।''

बाहर निकलने से पहले रमेश के सिर पर हाथ रखने से खुद को नहीं रोक पाया भरतू । ऐसा करते समय उसकी आँखें भीग गईं ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
दाखिला = प्रवेश
सकपकाना = डरना
हकलाना =रुकरुक कर बोलना

विचार मंथन

।। मुट्ठी में है तकदीर हमारी ।।

खोजबीन

ओलंपिक स्पर्धा संबंधी जानकारी प्राप्त करो :

- कब से प्रारंभ
- प्रतीक चिह्न और अर्थ
- किन-किन देशों में आयोजन ?
- अगली बार कहाँ होने वाला है ?
- ओलंपिक में पदक पाने वाले भारतीय

मेरी कलम से

मुद्दों के आधार पर कहानी लिखो :

- जंगल में पेड़ के नीचे चूहों का अपने राजासहित निवास ।
- राजा द्वारा चूहों को हमेशा दया, परोपकार की सलाह ।
- हाथियों का झुंड पानी की खोज में पेड़ के पास आना, चूहों को तकलीफ पहुँचाना ।
- चूहों की राजा से रक्षा की माँग ।
- चूहा-राजा का हाथियों के सरदार से मिलना और हाथी-सरदार का माफी माँगना ।
- चूहा-राजा द्वारा हाथी को पानी की जगह दिखाना ।
- हाथियों का शिकार करने शिकारी का आना, हाथियों को जाल में फँसना ।
- हाथियों का संदेश चिड़िया द्वारा चूहा-राजा को पहुँचाना ।
- चूहा-राजा का चूहों को सहायता करने भेजना ।
- चूहों का जाल काटना ।
- सीख और शीर्षक

❊ **पाठ के आधार पर ५-६ पंक्तियों में उत्तर लिखो :**

(क) भरतू किताब उठाने पर मन में क्यों चिढ़ा ?

(ख) सरिता देवी की हँसी का क्या कारण था ?

(ग) भरतू और उसके साथी रात देर तक कौन-सा खेल खेलते रहे ?

(घ) भरतू रमेश के घर के बाहर किसलिए खड़ा था ?

(च) सरिता देवी ने कौन-सी बात तय की ?

(छ) भरतू, रमन आदि बीच-बीच में गाँव किनसे मिलने जाते ?

सदैव ध्यान में रखो

कभी भी किसी का मन टूटने न देना ।

भाषा की ओर

वर्णों एवं शब्दों के मेल को देखो, पढ़ो और समझो :

१. **महर्षि** ध्यानमग्न बैठे थे ।
२. कन्याकुमारी का **भानूदय** अप्रतिम होता है ।
३. राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा **प्रत्येक** का कर्तव्य है ।

महा + ऋषि = आ + ऋ
भानु + उदय = उ + उ
प्रति + एक = इ + ए

स्वर संधि

१. रोगी को **तत्काल** भर्ती कराया गया ।
२. प्रतिज्ञा में एकात्मता का **उल्लेख** है ।
३. दिया हुआ **अनुच्छेद** पढ़ो ।

तत् + काल = त् + का
उत् + लेख = त् + ल
अनु + छेद = उ + छे

व्यंजन संधि

१. वह शरीर से बहुत **दुर्बल** है ।
२. केवल **मनोरथ** से ही काम नहीं बनता ।
३. मैंने पढ़ने का **निश्चय** किया है ।
४. मित्र को चोट पहुँचाकर उसे बहुत **मनस्ताप** हुआ ।

दुः + बल = विसर्ग (:) का र्
मन : + रथ = विसर्ग (:) का ओ
नि : + चय = विसर्ग (:) का श्
मन : + ताप= विसर्ग (:) का स्

विसर्ग संधि

संधि के भेद

संधि-ध्वनियों का मेल → ध्वनि + ध्वनि = नया रूप

हिम + आलय → हिम् + (अ) + (आ) लय = हिमालय

अ + आ = आ

संधि में दो ध्वनियाँ निकट आने पर आपस में मिल जाती हैं और एक नया रूप धारण कर लेती हैं ।

उपरोक्त उदाहरणों में (१) में महा+ऋषि, भानु+उदय, प्रति+एक शब्दों में **दो स्वरों** के मेल से जो परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **स्वर संधि** हुई । उदाहरण (२) में तत्+काल, उत्+लेख, अनु+छेद शब्दों में व्यंजन ध्वनि के निकट स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **व्यंजन संधि** हुई । उदाहरण (३) में विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में परिवर्तन हुआ है । अतः यहाँ **विसर्ग संधि** हुई ।

● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

१३. धन्यवाद

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

जन्म : ५ अगस्त १९१५, झगरपुर ग्राम (उ.प्र.) **मृत्यु :** २७ नवंबर २००२ **रचनाएँ :** हिल्लोल, मिट्टी की बारात, वाणी की व्यथा, प्रलय सृजन, युग का मोल **परिचय :** शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी कुशल प्रशासक, प्रखर चिंतक, विचारक और हिंदी के शीर्ष कवियों में एक हैं।
प्रस्तुत रचना के माध्यम से कवि सुमन जी ने हमें उपकार करने वालों, स्नेहियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया है।

बताओ तो सही

अपने घर के किसी प्रिय सदस्य पर कविता लिखकर सुनाओ।

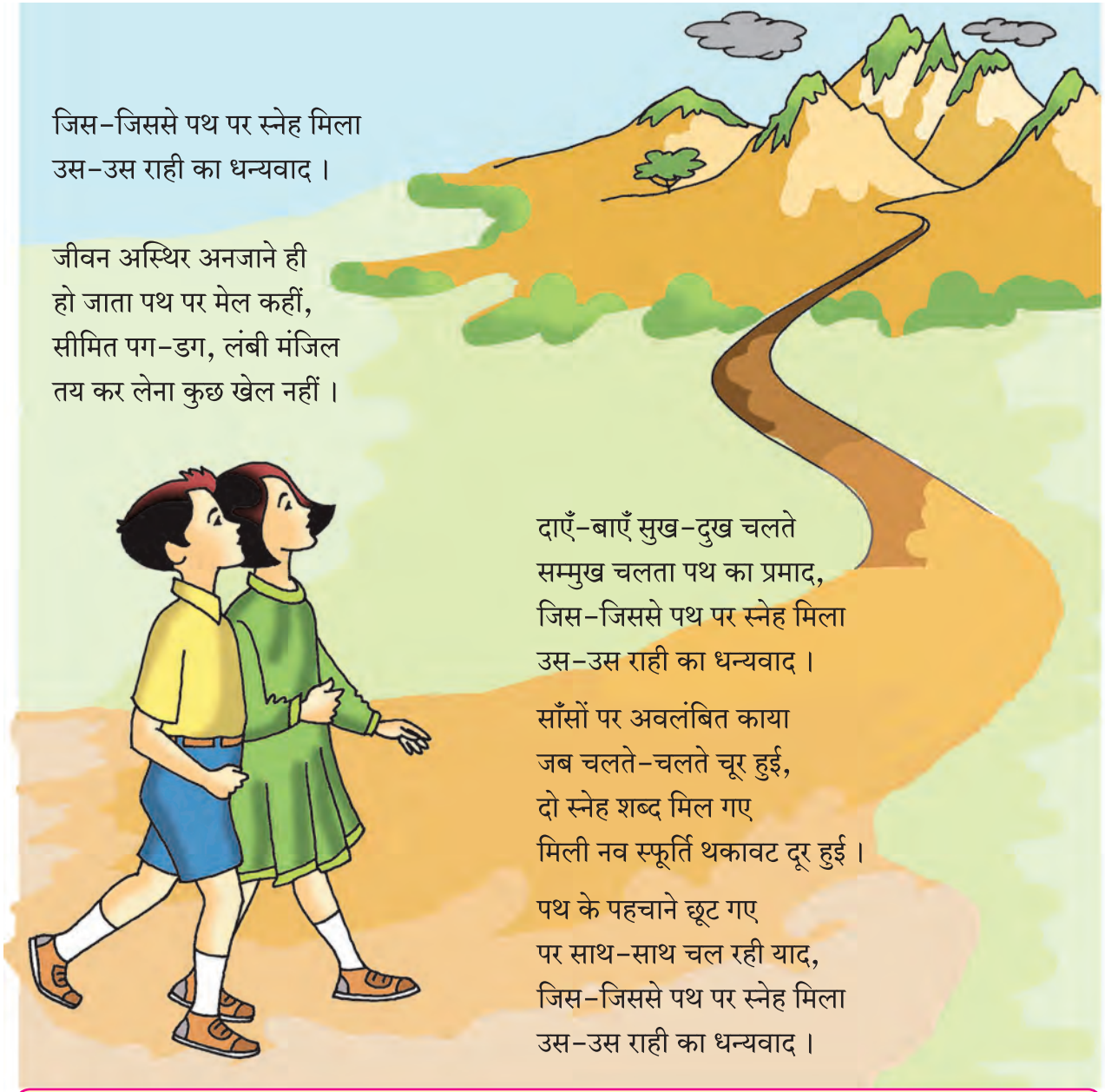

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद।

जीवन अस्थिर अनजाने ही
हो जाता पथ पर मेल कहीं,
सीमित पग-डग, लंबी मंजिल
तय कर लेना कुछ खेल नहीं।

दाएँ-बाएँ सुख-दुख चलते
सम्मुख चलता पथ का प्रमाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद।

साँसों पर अवलंबित काया
जब चलते-चलते चूर हुई,
दो स्नेह शब्द मिल गए
मिली नव स्फूर्ति थकावट दूर हुई।

पथ के पहचाने छूट गए
पर साथ-साथ चल रही याद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें। विद्यार्थियों से साभिनय, सामूहिक, गुट में, एकल पाठ करवाएँ। प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता में आए भावों को स्पष्ट करें। कविता में आए उपसर्ग/प्रत्ययवाले शब्दों से इन्हें अलग कराएँ।

अध्ययन कौशल

किसी शालेय कार्यक्रम का नियोजन करते हुए कार्यक्रम पत्रिका बनाओ ।

जो साथ न मेरा दे पाए
उनसे कब सूनी हुई डगर,
मैं भी न चलूँ यदि तो भी क्या
राही मर लेकिन राह अमर ।

इस पथ पर वे ही चलते हैं
जो चलने का पा गए स्वाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद ।

कैसे चल पाता यदि न मिला
होता मुझको आकुल अंतर,
कैसे चल पाता यदि मिलते
चिर तृप्ति अमरता पूर्ण प्रहर ।

आभारी हूँ मैं उन सबका
दे गए व्यथा का जो प्रसाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद ।

❑ विद्यार्थियों को किन-किन-से स्नेह मिलता है, बताने के लिए कहें । कब-कब, किन-किन को धन्यवाद करना चाहिए, चर्चा करें। धन्यवाद, मंजिल, थकावट, अमर, व्यथा, प्रसाद शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करके कक्षा में बताने के लिए प्रोत्साहित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

पथ = रास्ता
अस्थिर = चंचल
प्रमाद = भ्रम
सम्मुख = सामने
आकुल = व्याकुल
अंतर = मन, अंतस
व्यथा = कष्ट
राही = यात्री

विचार मंथन

।। वृक्ष करता सब पर उपकार
जग माने उसका आभार ।।

जरा सोचो ..... बताओ

अगर तुम्हारा बचपन ठहर जाए तो ...

सुनो तो जरा

हौसला, प्रेरणा, जीवन संघर्ष में से किसी भी विषय पर कविता सुनो और सुनाओ ।

वाचन जगत से

किसी एक पसंदीदा कविता के आशय का शाब्दिक तथा अंतर्निहित अर्थ का आकलन करते हुए वाचन करो और केंद्रीय भाव लिखो ।

सुनो तो जरा

अपने आसपास में घटी कोई हास्य घटना/प्रसंग सुनाओ ।

खोजबीन

अंतरजाल की सहायता से भारत के अब तक के राष्ट्रपतियों के नाम तथा उनका कार्यकाल ढूँढ़ो और बताओ ।

स्वयं अध्ययन

अब तक पढ़े मुहावरे, कहावतों का वर्णाक्रमानुसार लघु शब्दकोश बनाओ ।

❊ **कविता में निम्न शब्दों से सहसंबंध रखने वाले शब्द खोजकर लिखो :**

(क) सीमित पग-डग –
(ख) दाएँ-बाएँ –
(ग) साथ-साथ –
(घ) आकुल –
(ङ) व्यथा –
(च) राही –
(छ) जीवन –
(ज) पथ –
(झ) सूनी –
(ञ) राह –

सदैव ध्यान में रखो

सच्चा मित्र वही है, जो विपत्ति में काम आए ।

भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और करो :
() छोटा कोष्ठक, : [ ] बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक, { } मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक, ^ हंसपद

छोटा कोष्ठक ()
क्रमसूचक अक्षर, अंक, संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए () इसका प्रयोग करते हैं ।

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक{}
एक साधारण पद से संबंध रखने वाले अलग-अलग पंक्तियों के शब्दों को मिलाने के लिए { } इसका प्रयोग करते हैं ।

छोटा कोष्ठक ()

(१) सागर- (आश्चर्य से) आप सब मेरा इंतजार कर रहे हैं !
(२) निम्न प्रश्न हल करो :
(अ) ९५ X २६ (ब) ६००÷१५

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक { }

(१) {गोदान, निर्मला, गबन} प्रेमचंद जी के प्रसिद्ध उपन्यास हैं ।
(२) {तुलसीदास, कालिदास} महाकवि माने जाते हैं ।

उचित विराम चिह्न लगाओ :

१. कामायनी महाकाव्य कवि जयशंकर प्रसाद
२. विशाखा लंदन से दिल्ली आती है हवा जैसी आने की सूचना नहीं देती ।
३. बालभारती सुलभभारती हिंदी की पुस्तकें हैं ।
४. किसी दिन हम भी आपके घर आएँगे ।

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []
लेखन में त्रुटि या पूर्ति बताने, दूसरे कोष्ठक को घेरने के लिए [ ] इसका प्रयोग करते हैं ।

हंसपद ^
लेखन में जब कोई शब्द छूट जाता है तब उसे पंक्ति के ऊपर लिखकर ^ यह चिह्न लगाते हैं ।

बड़ा (वर्गाकर) कोष्ठक []

(१) रवींद्रनाथ ठाकुर का अनुवादित [अनूदित] साहित्य सब पढ़ते हैं ।
(२) देखो, आपका पत्र [नमूना (ड)] के अनुसार होना चाहिए ।

हंसपद ^

(१) अस्मि ने सुंदर ^ भेंटकार्ड बनाया ।
(२) पिता जी कल मुंबई ^ जाएँगे ।

अभ्यास–२

* पूरी वर्णमाला और १०० तक की गिनती क्रम से लिखकर मिलाओ और प्राप्त चित्र के बारे में लिखो :

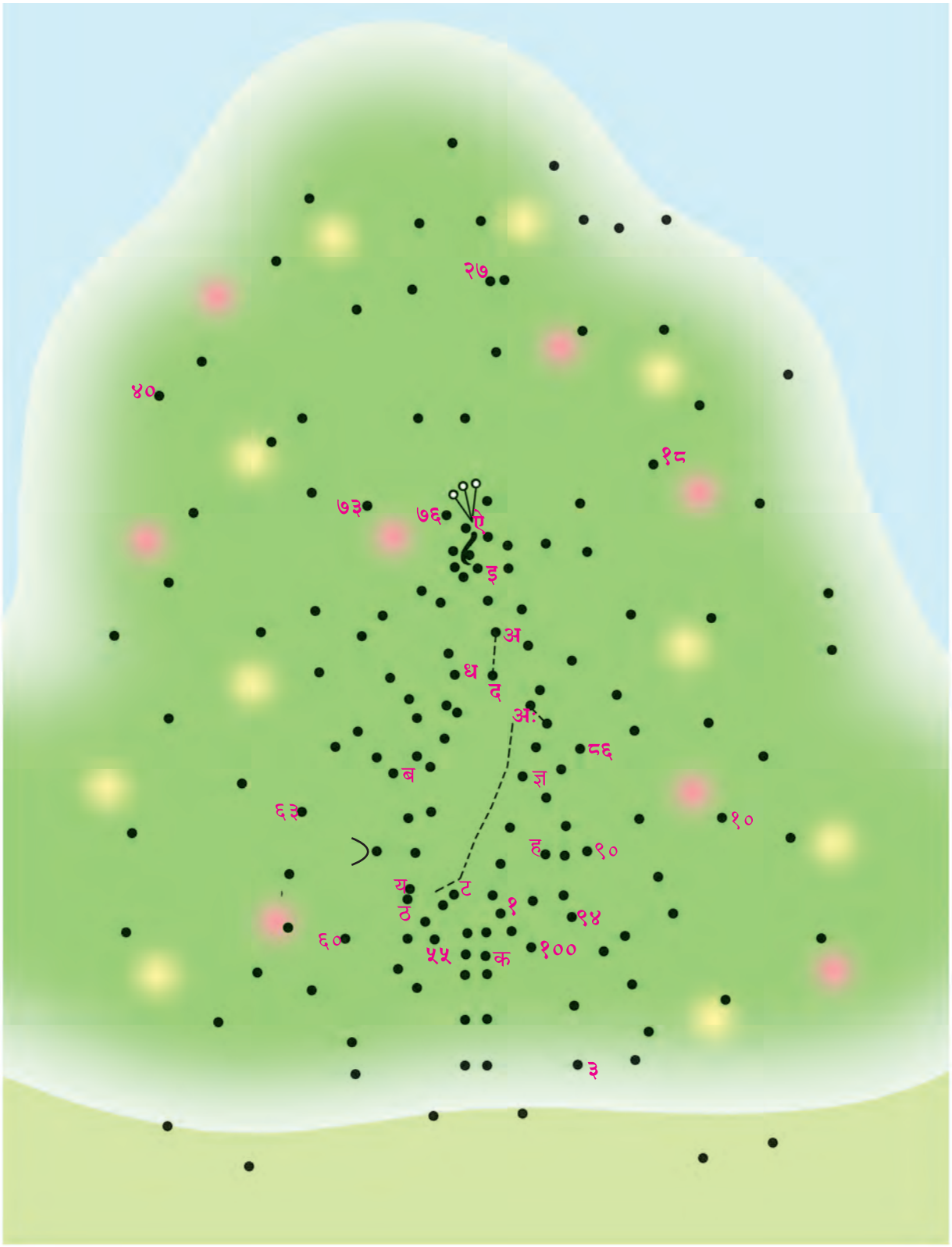

अभ्यास–३

* चित्रकथा का आकलन करके अपने शब्दों में कहानी लिखो और उचित शीर्षक बताओ । अंतिम चित्र देखो । उस जगह पर तुम होते तो क्या करते रिक्त चौखट में लिखो :

❑ विद्यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्र में कौन-कौन-सी घटनाएँ घटी होंगी, उन्हें सोचने के लिए कहें । उन्हें चित्रों एवं घटनाओं के आधार पर कहानी का आधुनिकीकरण करके लिखने के लिए प्रेरित करें और उचित शीर्षक देने के लिए कहें ।

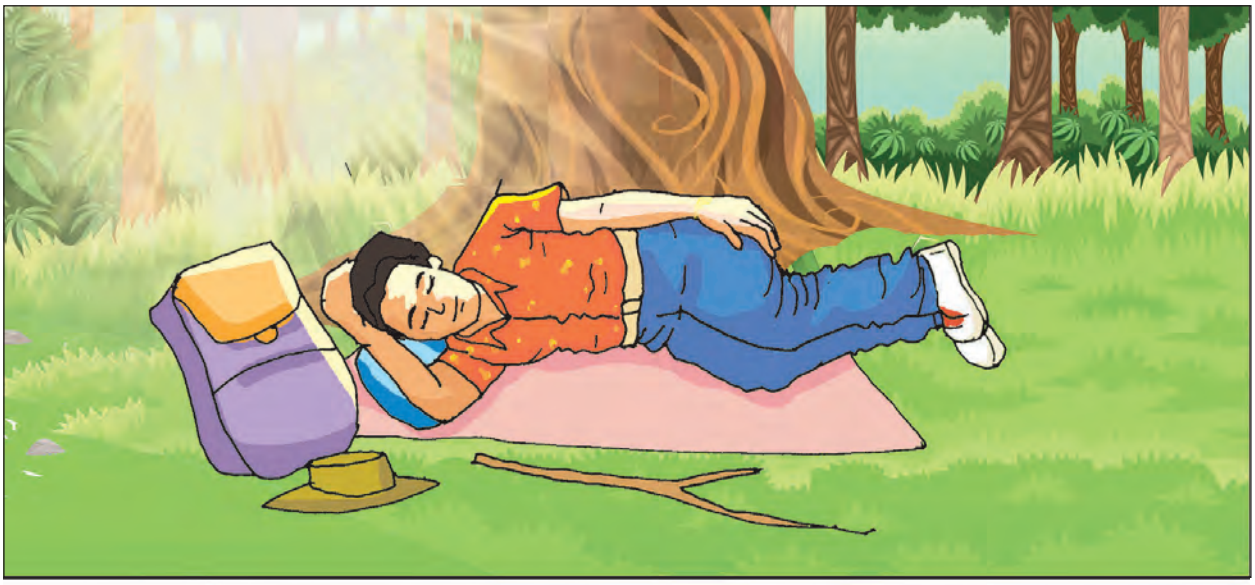

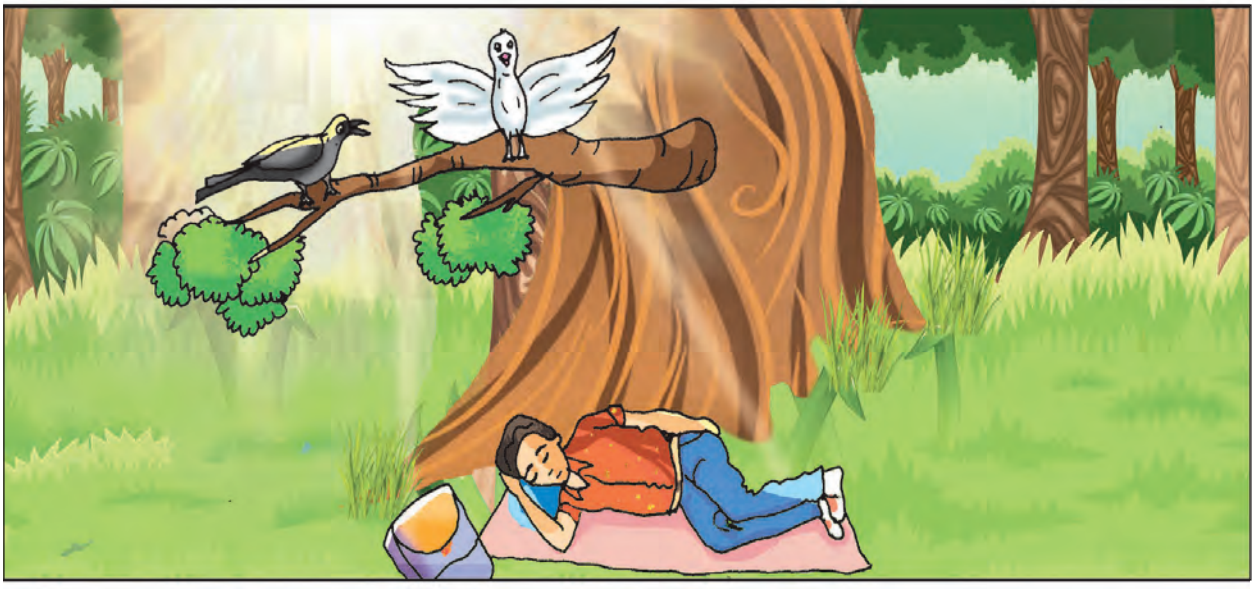

---

* पुनरावर्तन – २ *

१. अब तक सुनी सबसे अच्छी कविता सुनाओ ।

२. विद्यालय में अबतक मनाए गए पसंदीदा कार्यक्रम के बारे में बताओ ।

३. जातक कथाओं का वाचन करो ।

४. अपने प्रिय शिक्षक/शिक्षिका पर १२ से १५ वाक्य लिखो ।

५. विरामचिह्नों का उचित प्रयोग कर निम्न वाक्य पुन: लिखो :–

१. यही वह व्यक्ति है जिसने चोर को पकड़वाया

.....

.....

२. अहा इतनी मिठाई मेरे लिए

.....

.....

३. आप इस समय क्या कर रहे हैं

.....

.....

४. जो इस तोते को परेशान करते हैं वह उन्हीं को काटता है

.....

.....

५. यह आचार्य विनोबा की कार्य स्थली है

.....

.....

६. राकेश ने कहा मैं अपना गृहकार्य रोज करूँगा

.....

.....

७. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला बड़े दयालु थे

.....

.....

८. भारत में छह ऋतुएँ होती हैं ग्रीष्म वर्षा शरद हेमंत शिशिर और वसंत

.....

.....

कृति

अपने माँ–पिता जी से नाना/नानी के बारे में सुनो ।

कृति

स्वतंत्रता दिवस किस तरह मनाओगे, बताओ ।

उपक्रम

प्रति सप्ताह संत कवियों के कोई पद पढ़ो ।

प्रकल्प

विद्यालय में तैयार कंपोस्ट खाद पर एकल या गुट में प्रकल्प तैयार करो ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.
बालभारती इयत्ता ७ वी (हिंदी)
₹ 46.00